Chapter - 5

FRENCH REVOLUTION (फ्रांसीसी क्रांति)

French revolution was an answer to those questions which had been waiting before 1789 in Europe.These questions were-

-Relationships between Monarchy and Aristocracy,

- Monarchy and middle class,

- Aristocracy and middle class and

- Relationships between Middle class and lower class

फ्रांसीसी क्रांति उन सवालों का जवाब थी जो 1789 से पहले यूरोप में प्रतीक्षा कर रहे थे। ये प्रश्न थे–

- **राजतंत्र और अभिजात वर्ग के बीच संबंध,**
- **राजतंत्र और मध्यम वर्ग,**
- **अभिजात वर्ग और मध्यम वर्ग और**
- **मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के बीच संबंध**

According to David Thompson, 'The revolution does not take place for the fact that some people wanted it but it occurs due to the fact that some people wants something which unconsciously lead the people to revolution'. The condition was same in France. No one wanted revolution but still revolution occurred.

डेविड थॉम्पसन के अनुसार, 'क्रांति इसलिए नहीं होती कि कुछ लोग इसे चाहते थे, बल्कि इसलिए होती है कि कुछ लोग कुछ ऐसा चाहते हैं जो अनजाने में लोगों को क्रांति की ओर ले जाता है।'फ्रांस में भी यही स्थिति थी। कोई क्रांति नहीं चाहता था, फिर भी क्रांति हुई।

Causes of French Revolution-

1. Social Division in France: French society was divided into privileged class and non privileged class. Privileged section consisted of clergy and Aristocracy while Non- Privileged middle class and Lower class.

फ्रांसीसी क्रांति के कारण-

1. फ्रांस में सामाजिक विभाजन: फ्रांसीसी समाज विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग और गैर-विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में विभाजित था।विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में पादरी और अभिजात वर्ग शामिल थे, जबकि गैर-विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग शामिल थे।

The condition of higher clergy was much better but the condition of lower clergy was not good. It was much near to that of commoners. So lower clergy sympathized with common people.

Aristocratic class was having grievances against Monarchy ; during the period of French Monarch Louis-XIV, They lose some Privileges.

उच्च पादरियों की स्थिति काफ़ी बेहतर थी, लेकिन निचले पादरियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। उनकी स्थिति आम लोगों के काफ़ी करीब थी। इसलिए निचले पादरियों को आम लोगों से सहानुभूति थी। कुलीन वर्ग को राजतंत्र से शिकायतें थीं, फ्रांसीसी समाट लुई-XIV के काल में, उन्हें कुछ विशेषाधिकार खो देने पड़े।

Non- Privileged class consisted of middle and Lower class. Middle class included merchants, capitalists and different professional groups while lower class included peasants, Artisans and labours.

गैर-विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में मध्यम और निम्न वर्ग शामिल थे। मध्यम वर्ग में व्यापारी, पूंजीपति और विभिन्न पेशेवर समूह शामिल थे, जबकि निम्न वर्ग में किसान, कारीगर और मजदूर शामिल थे।

Note-Now the Question raises that the condition of middle class was better than it's counterpart (in other parts of Europe) then Why did the French middle class moved towards revolution?

There might be two reasons behind that -

- First, the better economic Condition of the French middle class made him more conscious about it's social rights .
- Second, in France, there was a sharp contradiction between economically effective class and socially effective class.

नोट- अब प्रश्न यह उठता है कि मध्य वर्ग की स्थिति अपने समकक्ष (यूरोप के अन्य भागों में) से बेहतर थी, फिर फ्रांसीसी मध्य वर्ग क्रांति की ओर क्यों बढ़ा? इसके पीछे दो कारण हो सकते हैं -

- **पहला, फ्रांसीसी मध्य वर्ग की बेहतर आर्थिक स्थिति ने उसे अपने सामाजिक अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बना दिया।**
- **दूसरा, फ्रांस में आर्थिक रूप से प्रभावी वर्ग और सामाजिक रूप से प्रभावी वर्ग के बीच तीव्र विरोधाभास था।**

2 - Economic Factors : - There was a deep decline in French economy before 1789. Monarchy was failed to solve the economic crisis.

3. Changing class equation: - During this period of economic crisis, new tensions emerged between the Aristocratic class and the middle class. Both classes were going to be more dissatisfied with the monarchy.

2 -आर्थिक कारक: -1789 से पहले फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट आ रही थी। राजतंत्र आर्थिक संकट का समाधान करने में विफल रहा।

3. बदलते वर्ग समीकरण: - आर्थिक संकट के इस दौर में कुलीन वर्ग और मध्यम वर्ग के बीच नए तनाव उत्पन्न हो गये। दोनों ही वर्ग राजतंत्र से और अधिक असंतुष्ट हो गये थे।

4. Role of French thinkers & Philosophers :- They provided an ideological base for the revolution.They belonged to the middle class so they believed in peaceful transformation not in revolution but they invented certain terms and phrases of protest which were used by revolutionaries in their favour.These terms and phrases attracted the attention of the French people.

5. Bankruptcy of Monarchy :- Monarchy found himself helpless to bring Solution of the economic crisis, hence it decided to call "Session of Estates General" after 175 years.Thus, Monarchy had surrendered before the situation.

4. फ्रांसीसी विचारकों और दार्शनिकों की भूमिका:- उन्होंने क्रांति के लिए एक वैचारिक आधार प्रदान किया। वे मध्यम वर्ग से संबंधित थे इसलिए वे क्रांति में नहीं बल्कि शांतिपूर्ण परिवर्तन में विश्वास करते थे लेकिन उन्होंने विरोध के कुछ शब्दों और वाक्यांशों का आविष्कार किया, जिनका उपयोग क्रांतिकारियों ने अपने पक्ष में किया। इन शब्दों और वाक्यांशों ने फ्रांसीसी लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

5. राजशाही का दिवालियापन:- राजशाही ने खुद को आर्थिक संकट का समाधान लाने में असहाय पाया, इसलिए उसने 175 वर्षों के बाद "एस्टेट्स जनरल का सत्र" बुलाने का फैसला किया। इस प्रकार, राजशाही ने स्थिति के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

All classes were excited at the news because all were having their agendas. They demanded voting rights as per population ratio or voting rights based on 'one person one vote'.In the session, differences appeared on the issue of voting.Third Estate demanded change in the voting Pattern, as 5% of the population enjoyed 2/3rd vote and the voices of the common people were ignored. There was no solution hence Third estate walked out and gathered in a nearby Tennis court

सभी वर्ग इस समाचार से उत्साहित थे क्योंकि सभी के अपने-अपने एजेंडे थे।उन्होंने जनसंख्या अनुपात के अनुसार मताधिकार या 'एक व्यक्ति एक वोट' के आधार पर मताधिकार की मांग की। सत्र में मतदान के मुद्दे पर मतभेद सामने आए। तीसरे वर्ग ने मतदान पद्धति में बदलाव की मांग की, क्योंकि 5% आबादी को 2/3 वोट प्राप्त थे और आम लोगों की आवाज को नजरअंदाज कर दिया गया था।

कोई समाधान नहीं निकला, इसलिए थर्ड एस्टेट वहां ने बहिष्कार किया और पास के टेनिस कोर्ट में इकट्ठा हो गया।

They declared themselves national representatives aspiring to frame the constitution for France. Thus a 'National assembly' was born & French revolution started in 1789.

उन्होंने खुद को राष्ट्रीय प्रतिनिधि घोषित कर फ्रांस के लिए संविधान बनाने की आकांक्षा व्यक्त की। इस प्रकार एक 'राष्ट्रीय सभा' का गठन हुआ और 1789 में फ्रांसीसी क्रांति शुरू हुई।

Various stages in French Revolution

Rule of National Assembly(1789-1791)

The Third estate was leading the revolution but it was not a monolithic group.It consisted of middle class and Lower class both. Middle class wanted to establish constitutional Monarchy but lower class socio-economic democracy. Middle class was dominant,hence Monarchy was preserved and balance was maintained in this stage.

फ्रांसीसी क्रांति के विभिन्न चरण

राष्ट्रीय सभा का शासन (1789-1791)

तीसरा वर्ग क्रांति का नेतृत्व कर रहा था, लेकिन यह एक अखंड समूह नहीं था। इसमें मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग दोनों शामिल थे। मध्यम वर्ग संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना चाहता था, लेकिन निम्न वर्ग सामाजिक-आर्थिक लोकतंत्र चाहता था। मध्यम वर्ग का प्रभुत्व था, इसलिए इस चरण में राजतंत्र को बनाए रखा गया और संतुलन स्थापित हो पाया ।

Events-

-Fall of Bastile on 14th July 1789 by the mob of Paris

-Abolition of Feudalism on 4th August 1789

-Declaration of citizen rights on 26th August 1789

-Attack on church's property in November 1789 and conversion into National property.

-Suspension of Tithes in 1790

घटनाएँ-

-14 जुलाई 1789 को पेरिस की भीड़ द्वारा बास्तील का पतन

-4 अगस्त 1789 को सामंतवाद का उन्मूलन

- 26 अगस्त 1789 को नागरिक अधिकारों की घोषणा

- नवंबर 1789 में चर्च की संपत्ति पर हमला और उसे राष्ट्रीय संपत्ति में परिवर्तित करना।

-1790 में टाईथस का निलंबन

The civil constitution of clergy-1791 and clergies were expected to take the oath of loyalty. who take oath were called jurors and others were called Non-Jurors. Most of the Non-Jurors were migrated to Europe.National assembly produced a new constitution for France in 1791.Montesquieu's law was asserted in new constitution.Human rights were declared.

पादरी वर्ग के नागरिक संविधान-1791 पादरियों से निष्ठा की शपथ लेने की अपेक्षा की जाती थी। शपथ लेने वाले सदस्यों को जूरी सदस्य और अन्य को गैर-जूरी सदस्य कहा जाता था। अधिकांश गैर-जूरी सदस्य यूरोप चले गए थे। राष्ट्रीय सभा ने 1791 में फ्रांस के लिए एक नया संविधान तैयार किया। नए संविधान में मोंटेस्क्यू के कानून को लागू किया गया। मानवाधिकारों की घोषणा की गई।

Second stage (1791-1792)-

During this phase,The middle class leadership was overpowerd by lower class,hence revoution turned to be bloody and violent. A 'national convention' was formed to rule but in this National convention,there was conflict between two fractions-Royalists and Radicals.

Royalists were inclined to restore the power of monarchy while the radicals tried to abolish monarchy and declare France a republic.

द्वितीय चरण (1791-1792) -

इस चरण के दौरान, मध्यम वर्ग का नेतृत्व निम्न वर्ग द्वारा दबा दिया गया, जिससे क्रांति खूनी और हिंसक हो गई। शासन करने के लिए एक 'राष्ट्रीय सम्मेलन' का गठन किया गया, लेकिन इस राष्ट्रीय सम्मेलन में दो धड़ों - राजभक्तों और कट्टरपंथियों - के बीच संघर्ष हुआ।

राजभक्त राजतंत्र की सत्ता को बहाल करने के पक्षधर थे, जबकि कट्टरपंथियों ने राजतंत्र को समाप्त करने और फ्रांस को गणराज्य घोषित करने का प्रयास किया।

Both decided to choose war to restore their position.Radicals abolished monarchy in 1792 and France was declared republic.

दोनों ने अपनी स्थिति बहाल करने के लिए युद्ध का रास्ता चुना। कट्टरपंथियों ने 1792 में राजशाही को समाप्त कर दिया और फ्रांस को गणतंत्र घोषित कर दिया गया।

In summer of 1792,the radicals stormed the palace of the Tuilries , massacred the king's Guard and held the king as hostage .In january 1793,the king was guillotined publically.Thus monarchy was abolished.

1792 की गर्मियों में, उग्रवादियों ने टूयूलरीज़ के महल पर धावा बोल दिया, राजा के रक्षकों का नरसंहार किया और राजा को बंधक बना लिया।जनवरी 1793 में, राजा को सार्वजनिक रूप से गिलोटिन से मार दिया गया। इस प्रकार राजतंत्र समाप्त हो गया।

Third stage-1792-95

The election was held in france .The newly elected assembly was called the 'national convention'. There was two fractions in national convention- Girondist and Jacobeans.

तीसरा चरण-1792-95

फ्रांस में चुनाव हुए। नवनिर्वाचित सभा को 'राष्ट्रीय सभा ' कहा गया।

राष्ट्रीय सभा में दो गुट थे- जिरोंदिस्त और जैकोबीयन।

This development finally led to the establishment of a bloody and Jacobean state popularly known as Regime of Terror. Now the revolution came to be bloody phase and started to devour it's own child.

इस घटनाक्रम ने अंततः एक खूनी और जैकोबीयन राज्य की स्थापना की, जिसे आतंक के शासन के नाम से जाना जाता है। अब यह क्रांति खूनी दौर में बदल गई और अपने ही बच्चे को निगलने लगी।

Most of the Girondist leaders were killed but later struggle started in jacobeans . Robes Pierre was the last jacobean leader who operated government.Robes Pierre was also killed in 1794.Thereupon Rightists controlled the situation.

अधिकांश जिरोंदिस्त नेता मारे गए लेकिन बाद में जैकोबीन में संघर्ष शुरू हो गया। रॉब्स पियरे अंतिम जैकोबीन नेता थे जिन्होंने सरकार का संचालन किया। रॉब्स पियरे भी 1794 में मारे गए। इसके बाद दक्षिणपंथियों ने स्थिति पर नियंत्रण कर लिया।

Fourth Stage (1795-1799)

The rightists ruled in this phase.They produced a new constitution for France in 1795.In this constitution, there was a provision for bicameral legislative body but executive power was given to 5 directors.

चतुर्थ चरण (1795-1799)

इस चरण में दक्षिणपंथियों का शासन था। उन्होंने 1795 में फ्रांस के लिए एक नया संविधान तैयार किया। इस संविधान में द्विसदनीय विधायिका का प्रावधान था, लेकिन कार्यकारी शक्ति 5 निदेशकों को दी गई थी।

Leaders of France wanted to limit the progress of political parties, that's why directors were to be selected from outside of legislative chambers but such step could be costly for France as in absence of political parties, the way for individuals was clear which led to rise of Napolean Bonaparte.

फ्रांस के नेता राजनीतिक दलों की प्रगति को सीमित करना चाहते थे, इसीलिए निदेशकों का चयन विधानमंडल के बाहर से किया जाना था, लेकिन ऐसा कदम फ्रांस के लिए महंगा पड़ सकता था क्योंकि राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में, व्यक्तियों के लिए रास्ता साफ था, जिसके कारण नेपोलियन बोनापार्ट का उदय हुआ।

Fifth Stage (1799-1814)

The phase of Dictatorship

Napolean Bonaparte was borned on the island of Corsica.He rapidly rose through the rank of the military during the French revolution.After controlling the power of directors in 1799,he crowned himself as an Emperor in 1804. Shrewd,ambitious and skilled military strategist, Napolean successfully waged wars against various coalitions of European nations and expanded his empire .

पाँचवाँ चरण (1799-1814)

तानाशाही का चरण

नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म कोर्सिका द्वीप पर हुआ था। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान वह सैन्य रैंक में तेज़ी से आगे बढ़ा । 1799 में निर्देशकों की शक्ति को नियंत्रित करने के बाद, उसने 1804 में खुद को सम्राट घोषित किया।
चतुर, महत्वाकांक्षी और कुशल सैन्य रणनीतिकार, नेपोलियन ने यूरोपीय राष्ट्रों के विभिन्न गठबंधनों के खिलाफ सफलतापूर्वक युद्ध छेड़े और अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

-British Royal Navy defeated the fleet of France and spain in 1805 at the cape of Trafagalar of spain.British Navy commander Nelson was leading the Royal navy.

- Napolean defeated Austria in the battle of Austerlize in the same year hence Treaty of Pressburg was signed between France and Austria which concluded the war.

-ब्रिटिश रॉयल नेवी ने 1805 में स्पेन के ट्राफगालर केप में फ्रांस और स्पेन के बेड़े को हराया। ब्रिटिश नौसेना के कमांडर नेल्सन रॉयल नेवी का नेतृत्व कर रहे थे।

-नेपोलियन ने उसी वर्ष ऑस्टरलाइज़ के युद्ध में ऑस्ट्रिया को हराया, इसलिए फ्रांस और ऑस्ट्रिया के बीच प्रेसबर्ग की संधि पर हस्ताक्षर किए गए जिससे युद्ध समाप्त हो गया।

-Napolean defeated Prussia in the battle of Jena in 1806.

-Napolean defeated Russia in 1807 in the battle of Freedland and signed a Treaty of Tilsit.

Now Napolean was at highest Peak.He started continental system to Blocked of Britain.

-नेपोलियन ने 1806 में जेना के युद्ध में प्रशा को हराया।

-नेपोलियन ने 1807 में फ्रीडलैंड के युद्ध में रूस को हराया और टिलसिट की संधि पर हस्ताक्षर किए।

अब नेपोलियन अपने सर्वोच्च शिखर पर था। उसने ब्रिटेन को घेरने के लिए महाद्वीपीय व्यवस्था की शुरुआत की।

In His Moscow compaign of 1812,He was defeated by Russia.Thereafter Napolean was deported to Elba Island.Through his 100 days compaign,Napolean once again got the throne of France. Finally,he was defeated in the batlle of waterloo in 1814 and was exiled to St. Helena Island where he died.

1812 के अपने मास्को अभियान में, वह रूस से हार गया। उसके बाद नेपोलियन को एल्बा द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया।अपने 100 दिनों के अभियान के माध्यम से, नेपोलियन ने एक बार फिर फ्रांस की गद्दी संभाली। अंततः, 1814 में वाटरलू के युद्ध में उसकी हार हुई और उसे सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

Impact of French Revolution

Pros:-

- The French revolution had an important impact not just on France, but rest of the world.
- Monarchy was abolished and Republic took place.
- Political sovereignty introduced at individual and nation-state level with a centralized government.
- Feudalism and Slavery were abolished and the influence of church decreased in Personal lives.
- The privileged classes as the first and Second estate were abolished.
- Idea of separation of public and private realm emerged.
- French revolution ushered in the new economic system of capitalism against the prevalent feudalism. French revolution inspired movements against colonialism in colonies around the World, while movements for democracy and self-rule rose in whole of Europe.
- Limited suffrage, especially women were excluded, slavery was reintroduced by Napoleon.

फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव

लाभ:-

- **फ्रांसीसी क्रांति का न केवल फ्रांस पर, बल्कि शेष विश्व पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।**
- **राजतंत्र का अंत हुआ और गणतंत्र की स्थापना हुई।**
- **केंद्रीकृत सरकार के साथ व्यक्तिगत और राष्ट्र-राज्य स्तर पर राजनीतिक संप्रभुता की शुरुआत हुई।**

- सामंतवाद और दास प्रथा को समाप्त कर दिया गया और व्यक्तिगत जीवन में चर्च का प्रभाव कम हो गया।
- प्रथम और द्वितीय वर्ग जैसे विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों को समाप्त कर दिया गया।
- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के पृथक्करण का विचार उभरा।
- फ्रांसीसी क्रांति ने प्रचलित सामंतवाद के विरुद्ध पूंजीवाद की नई आर्थिक व्यवस्था की शुरुआत की। फ्रांसीसी क्रांति ने दुनिया भर के उपनिवेशों में उपनिवेशवाद के विरुद्ध आंदोलनों को प्रेरित किया, जबकि पूरे यूरोप में लोकतंत्र और स्वशासन के लिए आंदोलन उठे।
- सीमित मताधिकार, विशेषकर महिलाओं को इससे बाहर रखा गया, नेपोलियन द्वारा दास प्रथा को पुनः लागू किया गया।

Cons:-

- Post-revolution regime failed to resolve the grievances of the workers, who were the main force during the uprising of 1789, and only the peasants benefited.
- The revolution failed to bring democratic rule and the Reign of Terror under the Jacobeans started.
- Napoleon, due to his continuous warfare resulted in rise of nationalism in the invaded territories and he came to be perceived, not as a liberator but a conqueror. This nationalism was to prove advantageous to the unification of Germany and Italy in 1871.

विपक्ष:-

- क्रांति के बाद की सरकार श्रमिकों की शिकायतों का समाधान करने में विफल रही, जो 1789 के विद्रोह के दौरान मुख्य शक्ति थे, और केवल किसानों को ही लाभ हुआ।
- क्रांति लोकतांत्रिक शासन लाने में विफल रही और जैकोबिन्स के अधीन आतंक का शासन शुरू हो गया।
- नेपोलियन के निरंतर युद्धों के कारण, आक्रमणग्रस्त क्षेत्रों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ और उसे मुक्तिदाता नहीं, बल्कि विजेता माना जाने लगा। यह राष्ट्रवाद 1871 में जर्मनी और इटली के एकीकरण के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ।

CONTINENTAL SYSTEM OF NAPOLEON

Napoleon was the Monarch of France from 1804 to 1815. He defeated Prussia in 1806 in the Battle of Jena and captured Berlin. The British council passed an order on 16 May 1806 by which the Royal Navy instituted a blockade of all ports from Brest (France) to Elbe (Germany).

नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था

नेपोलियन 1804 से 1815 तक फ्रांस का सम्राट था। उसने 1806 में जेना के युद्ध में प्रशा को हराया और बर्लिन पर कब्ज़ा कर लिया।ब्रिटिश काउंसिल ने 16 मई 1806 को एक आदेश पारित किया जिसके तहत रॉयल नेवी ने ब्रेस्ट (फ्रांस) से एल्बे (जर्मनी) तक सभी बंदरगाहों की नाकाबंदी कर दी।

Napoleon issued Berlin Decree on 21 November 1806 in answer to British Blockade. According to Berlin Decree-

- The British isles are declared to be in a state of blockade.
- All correspondence and commerce with the British Isles were forbidden.
- All British subjects found in the territory of France or all its allies were to be arrested as prisoners of war.
- All British goods and merchandise shall be seized.

नेपोलियन ने ब्रिटिश नाकाबंदी के जवाब में 21 नवंबर 1806 को बर्लिन डिक्री जारी की। बर्लिन डिक्री के अनुसार-

- **ब्रिटिश द्वीपों को नाकाबंदी की स्थिति में घोषित कर दिया गया।**
- **ब्रिटिश द्वीपों के साथ सभी प्रकार के पत्राचार और व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया गया।**
- **फ़्रांस या उसके सभी सहयोगियों के क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी ब्रिटिश नागरिकों को युद्धबंदी के रूप में गिरफ़्तार किया जाना था।**
- **सभी ब्रिटिश सामान और व्यापारिक वस्तुओं को ज़ब्त कर लिया जाएगा।**

Any vessel found contravening the decree and Landing in a continental Port from a port of Britain and its allies and colonies will be confiscated along with all of its cargo.

यदि कोई जहाज इस आदेश का उल्लंघन करते हुए पाया गया और ब्रिटेन तथा उसके सहयोगियों और उपनिवेशों के बंदरगाह से किसी महाद्वीपीय बंदरगाह पर उतरा तो उसे उसके सभी माल के साथ जब्त कर लिया जाएगा।

The Goal of the so called continental System was to force Britain to the peace table by starving it of trade with Europe.The Blockade's effectiveness was very difficult to enforce over so vast area and was generally unpopular among its allies.

तथाकथित महाद्वीपीय व्यवस्था का लक्ष्य ब्रिटेन को यूरोप के साथ व्यापार से वंचित करके उसे शांति वार्ता के लिए बाध्य करना था।इतने विशाल क्षेत्र में नाकाबंदी को प्रभावी ढंग से लागू करना बहुत कठिन था और यह अपने सहयोगियों के बीच आम तौर पर अलोकप्रिय थी।

Historian Paul Schroeder considers it to have proved an ineffective method of economic warefare. The continental system eventually led to economic ruin for France and its allies. Less damage was done to the economy of Britain because it had control over the trade of Atlantic ocean. Other European nations removed themselves from the continental system which led in part of the downfall of Napoleon.

इतिहासकार पॉल श्रोएडर का मानना है कि यह आर्थिक युद्ध का एक प्रभावी तरीका साबित हुआ।
महाद्वीपीय व्यवस्था ने अंततः फ्रांस और उसके सहयोगियों के लिए आर्थिक बर्बादी का कारण बना। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को कम नुकसान हुआ क्योंकि अटलांटिक महासागर के व्यापार पर उसका नियंत्रण था। अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने खुद को महाद्वीपीय व्यवस्था से अलग कर लिया, जिसके कारण नेपोलियन का पतन हुआ।

Q- Continental system was a wrong conception deliberated by Napoleon, which remained unsuccessful due to his own inherent faults. Discuss.

Answer- England was a big obstacle in the Napoleons Imperialist expansion. Since British navy was more powerful than French navy therefore Napoleon was never able to defeat them. At the end Napoleon tried to paralyze Britain Financially through its continental system.

Q-. महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन द्वारा विचारित एक गलत अवधारणा थी, जो उसके अपने अंतर्निहित दोषों के कारण असफल रही। चर्चा कीजिए।

उत्तर: नेपोलियन के साम्राज्यवादी विस्तार में इंग्लैंड एक बड़ी बाधा था। चूँकि ब्रिटिश नौसेना फ्रांसीसी नौसेना से अधिक शक्तिशाली थी, इसलिए नेपोलियन उन्हें कभी पराजित नहीं कर सका। अंततः नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था के माध्यम से ब्रिटेन को आर्थिक रूप से पंगु बनाने का प्रयास किया।

Continental System

- If British manufactured goods were restricted from entering to European market, the British manufacturing industry would be destroyed. Which would plunge the British economy and increase unemployment.

- After ruining British economy, it was easy to defeat Britain.

महाद्वीपीय व्यवस्था

- **यदि ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को यूरोपीय बाज़ार में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर दिया जाता, तो ब्रिटिश विनिर्माण उद्योग नष्ट हो जाता। जिससे ब्रिटिश अर्थव्यवस्था चरमरा जाती और बेरोज़गारी बढ़ जाती।**
- **ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को बर्बाद करने के बाद, ब्रिटेन को हराना आसान था।**
- By blocking the European market for England, England would have to buy food items from France at expensive rates , due to which France would get Foreign currency.
- Through the decree of "Berlin" and "Milan", Napoleon tried to proclaim continental system and through these decrees he banned the states under its control from trading with Britain.
- **इंग्लैंड के लिए यूरोपीय बाजार अवरुद्ध करने से इंग्लैंड को फ्रांस से महंगी दरों पर खाद्य पदार्थ खरीदने पड़ते, जिससे फ्रांस को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती।"बर्लिन" और "मिलान" के फरमानों के माध्यम से नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था की घोषणा करने का प्रयास किया और इन फरमानों के माध्यम से उसने अपने नियंत्रण वाले राज्यों को ब्रिटेन के साथ व्यापार करने पर प्रतिबंध लगा दिया।**

Results of continental system

- Continental system turned unsuccessful in paralyzing British trade and commerce.
- This system was proved suicidal for Napoleon because in an effort to enforce this system he fought wars with many nations like Portugal and Spain.

महाद्वीपीय व्यवस्था के परिणाम

- **महाद्वीपीय व्यवस्था ब्रिटिश व्यापार और वाणिज्य को पंगु बनाने में असफल रही।यह व्यवस्था नेपोलियन के लिए आत्मघाती साबित हुई क्योंकि इस व्यवस्था को लागू करने के प्रयास में उसने पुर्तगाल और स्पेन जैसे कई देशों के साथ युद्ध लड़े।**
- It is possible that Britain would have been harmed by a continental system if it was properly and fully implemented, but it harmed Napoleon more than his enemy.

Fault in continental system and reasons for its failure.

- Napoleon’s navy was not strong enough to block Britain's sea trade and smuggling.
- Napoleon's policy of control over commerce was protested by many nations - Turkey, Portugal, Spain, Russia etc.
- **यह संभव है कि यदि महाद्वीपीय व्यवस्था को ठीक से और पूरी तरह से लागू किया जाता, तो ब्रिटेन को इससे नुकसान होता, लेकिन इससे नेपोलियन को उसके शत्रु से भी ज़्यादा नुकसान हुआ।महाद्वीपीय व्यवस्था में दोष और उसकी विफलता के कारण।**
- **नेपोलियन की नौसेना ब्रिटेन के समुद्री व्यापार और तस्करी को रोकने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं थी।**
- **नेपोलियन की वाणिज्य पर नियंत्रण की नीति का कई देशों - तुर्की, पुर्तगाल, स्पेन, रूस आदि - ने विरोध किया।**
- Therefore without blocking these markets it was impossible to enforce continental system successfully.
- Napoleon adopted a dictatorial attitude towards other nations.

Conclusion:

Napoleon's continental system got failed due to lack of a proper implementation.

नेपोलियन ने यूरोप के बाहर ब्रिटिश औपनिवेशिक बाज़ारों की उपेक्षा की। इसलिए इन बाज़ारों को अवरुद्ध किए बिना महाद्वीपीय व्यवस्था को सफलतापूर्वक लागू करना असंभव था।

नेपोलियन ने अन्य राष्ट्रों के प्रति तानाशाही रवैया अपनाया।

निष्कर्ष:

नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था उचित क्रियान्वयन के अभाव में विफल हो गई।

Q. Nationalism was responsible for the rise of Napoleon and it was the nationalism that doomed his fate. Justify the statement.

STRUCTURE OF THE ANSWER:

Introduction-

Explain how Napoleon on the basis of his extra ordinary military and administrative capacity and hardwork conquered the Europe.

Q राष्ट्रवाद नेपोलियन के उत्थान के लिए ज़िम्मेदार था और यही राष्ट्रवाद उसके भाग्य का कारण बना। इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

उत्तर की संरचना:

प्रस्तावना-

बताइए कि नेपोलियन ने अपनी असाधारण सैन्य और प्रशासनिक क्षमता और कड़ी मेहनत के बल पर यूरोप पर किस प्रकार विजय प्राप्त की।

Main Body-

- Mention how nationalism helped in the rise of Napoleon.
- Mention how nationalism has ended the dynasty of Napoleon.

Conclusion-

- Napoleon tried to crush the feeling of nationalism in other countries and it was the main cause of his downfall.
- **मुख्य भाग-**
- **उल्लेख कीजिए कि राष्ट्रवाद ने नेपोलियन के उत्थान में किस प्रकार सहायता की।**
- **उल्लेख कीजिए कि राष्ट्रवाद ने नेपोलियन के वंश को किस प्रकार समाप्त कर दिया।**

निष्कर्ष-नेपोलियन ने अन्य देशों में राष्ट्रवाद की भावना को कुचलने का प्रयास किया और यही उसके पतन का मुख्य कारण बना।

FULL ANSWER: INTRODUCTION:

Napoleon appeared as a comet in the politics of Europe.Through his policies and hardwork,he became the fortune-master of Europe. His military skill and administrative ability astonishesd everyone but the pillar of his powers was balanced on the walls of sand which was soon destroyed within few years.He was shinning on the sky of Europe due to his military might but soon his destiny star sinked.

परिचय:

नेपोलियन यूरोप की राजनीति में एक धूमकेतु की तरह प्रकट हुआ। अपनी नीतियों और परिश्रम से वह यूरोप का भाग्यविधाता बन गया। उसके सैन्य कौशल और प्रशासनिक क्षमता ने सभी को चकित कर दिया, लेकिन

उसकी शक्तियों का स्तंभ रेत की दीवारों पर टिका हुआ था, जो कुछ ही वर्षों में नष्ट हो गया। वह अपनी सैन्य शक्ति के कारण यूरोप के आकाश पर चमक रहा था, लेकिन जल्द ही उसके भाग्य का सितारा डूब गया।

MAIN BODY

There was drastic change during French Revolution in France and the feeling of nationalism reached on its height.As a result, Napoleon,a great conqueror came in limelight.Napoleon was King of France between 1804 to 1815. He destroyed the democracy of France and established monarchy (Rajtantra).

मुख्य भाग

फ़्रांस में फ्रांसीसी क्रांति के दौरान व्यापक परिवर्तन हुए और राष्ट्रवाद की भावना अपने चरम पर पहुँच गई। परिणामस्वरूप, एक महान विजेता नेपोलियन सुर्खियों में आया।

नेपोलियन 1804 से 1815 तक फ़्रांस का राजा रहा। उसने फ़्रांस के लोकतंत्र को नष्ट कर दिया और राजतंत्र की स्थापना की।

He made drastic change in administration. He tried to make it more better and effective. He introduced Civil Code in 1804 which was also called Napoleon Code.Through this code privilege given on the basis of birth was taken.Everybody was equal before law.

उसने प्रशासन में व्यापक परिवर्तन किए। उसने इसे और बेहतर और प्रभावी बनाने का प्रयास किया। उसने 1804 में नागरिक संहिता लागू की, जिसे नेपोलियन संहिता भी कहा जाता है। इस संहिता के माध्यम से जन्म के आधार पर दिए गए विशेषाधिकार छीन लिए गए। कानून के समक्ष सभी समान थे।

"The Right to Property"was given to each citizen. He made the administration easie in Dutch Republic, Italy, Germany and Switzerland. He ended the Feudal system and freed the peasant from slavery and taxes imposed on them.

प्रत्येक नागरिक को "संपत्ति का अधिकार" दिया गया। उसने डच गणराज्य, इटली, जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड में प्रशासन को आसान बनाया। उन्होंने सामंती व्यवस्था का अंत किया और किसानों को दासता और उन पर लगाए जाने वाले करों से मुक्त किया।

He also ended the limitation of the famous craft imposed in cities. Improvements were made in the fields of transport and communication.

This new freedom was strongly appreciated and welcomed by peasants, labours and craftsman. They now understood that uniform civil code, standard measurement system and currency pool are rich. Exchange of goods and currency across the country became convenient.

उसने शहरों में प्रसिद्ध शिल्प पर लगे प्रतिबंधों को भी समाप्त कर दिया। परिवहन और संचार के क्षेत्र में सुधार किए गए।इस नई आज़ादी का किसानों, मज़दूरों और शिल्पकारों ने पुरज़ोर स्वागत किया। अब उन्हें समझ में आ गया था कि समान नागरिक संहिता, मानक माप प्रणाली और मुद्रा भंडार समृद्ध हैं। देश भर में वस्तुओं और मुद्रा का आदान-प्रदान सुविधाजनक हो गया।

At the beginning, the French military was seen as the messenger of freedom but soon people understood that new administrative system is not going to help them in the field of political freedom. Heavy taxes levied.Forcefully soldiers were entered in French military.Thus,the initial zeal was quickly transformed in opposition and objections.

शुरुआत में फ्रांसीसी सेना को स्वतंत्रता का संदेशवाहक माना गया, लेकिन जल्द ही लोगों को समझ आ गया कि नई प्रशासनिक व्यवस्था राजनीतिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में उनकी कोई मदद नहीं करेगी। भारी कर लगाए गए। फ्रांसीसी सेना में जबरन सैनिकों को भर्ती किया गया। इस प्रकार, शुरुआती उत्साह जल्द ही विरोध और आपत्तियों में बदल गया।

Napoleon has expanded his idea of imperialism and he conquered Holland, Spain, Italy etc. but he made his relatives ruler of the conquered countries. Later These foreign ruler was strongly criticised by the people of these countries. Feeling of nationalism developed in these areas. This feeling of nationalism weakened the powers of Napoleon and he became victim of nationalism.Tremendous aspirations, faulty military system,

नेपोलियन ने साम्राज्यवाद की अपनी अवधारणा का विस्तार किया और हॉलैंड, स्पेन, इटली आदि पर विजय प्राप्त की, लेकिन विजित देशों का शासक अपने रिश्तेदारों को बनाया। बाद में इन देशों की जनता ने इन विदेशी शासकों की कड़ी आलोचना की। इन क्षेत्रों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास हुआ। इस राष्ट्रवाद की भावना ने नेपोलियन की शक्तियों को कमजोर कर दिया और वह राष्ट्रवाद का शिकार हो गया।

अत्यधिक आकांक्षाएँ, दोषपूर्ण सैन्य व्यवस्था,

thinking Spain inferior, continental system,more time taking in Mascow campaign, attack in Battle of Waterloo were his major faults. In this context Napoleon says. "I wasted the time and time wasted me".He also tried to reverse the current of history. French Revolution tried to end the imperialism and established Republican society but Napoleon established and gave the rule to his relatives and tried to establish Hereditary monarchy.

स्पेन को हीन समझना, महाद्वीपीय व्यवस्था, मास्को अभियान में अधिक समय लगना और वाटरलू के युद्ध में पराजय, ये उसकी प्रमुख कमियाँ थीं। इस संदर्भ में नेपोलियन कहता है, "मैंने समय बर्बाद किया और समय ने मुझे बर्बाद किया।" उसने इतिहास की धारा को उलटने का भी प्रयास किया। फ्रांसीसी क्रांति ने साम्राज्यवाद को समाप्त कर गणतांत्रिक समाज की स्थापना का प्रयास किया, लेकिन नेपोलियन ने अपने रिश्तेदारों को शासन सौंपकर वंशानुगत राजतंत्र स्थापित करने का प्रयास किया।

CONCLUSION

The French Revolution supported the nationalism whereas Napoleon tried to crush the same nationalism. Hence, we can say that the elements which helped Napoleon to established his dynasty was also the cause of his decline.

निष्कर्ष

फ्रांसीसी क्रांति ने राष्ट्रवाद का समर्थन किया जबकि नेपोलियन ने उसी राष्ट्रवाद को कुचलने का प्रयास किया। अतः हम कह सकते हैं कि जिन तत्वों ने नेपोलियन को अपना वंश स्थापित करने में मदद की, वही उसके पतन का कारण भी बने।

Russian revolution

The Russian revolution was a greater landmark in the history of the world.It was an answer to those questions which had remained unanswered in French revolution.The question was the relationship between middle class and lower class.

The Russian revolution was different from others in the sense of Ideology.The ideology was dominant in

रूसी क्रांति

रूसी क्रांति विश्व इतिहास में एक बड़ी उपलब्धि थी। यह उन सवालों का जवाब थी जो फ्रांसीसी क्रांति में अनुत्तरित रह गए थे। सवाल था मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के बीच के रिश्ते का।विचारधारा के लिहाज से रूसी क्रांति अन्य क्रांतियों से अलग थी। विचारधारा प्रमुख थी।

Russian revolution-

There were two revolution in it but M.T.Florinski put the idea of two phases in a revolution-

1-Bourgeoisie revolution of march 1917

2-Bolshevik revolution of October 1917

There were following reasons of Russian revolution-

(i)Autocratic nature of Russian government.

ii)Social division of Russia in Aristocracy and Serfs.Although serfdom was abolished in Russia, land was not distributed hence food crisis was created in Russia.

(iii)Progressive Aristocrates had joined Duma and conservatives were not capable to save Monarchy.

रूसी क्रांति-

इसमें दो क्रांतियाँ हुईं, लेकिन एम.टी. फ्लोरिंस्की ने एक क्रांति के दो चरणों का विचार रखा-

1- मार्च 1917 की बुर्जुआ क्रांति

2- अक्टूबर 1917 की बोल्शेविक क्रांति

रूसी क्रांति के निम्नलिखित कारण थे-

(i) रूसी सरकार की निरंकुश प्रकृति।

ii) रूस का सामाजिक विभाजन अभिजात वर्ग और कृषिदासों में। यद्यपि रूस में कृषिदास प्रथा समाप्त कर दी गई थी,परन्तु भूमि का वितरण नहीं किया गया, जिससे रूस में खाद्य संकट उत्पन्न हो गया।

(iii) प्रगतिशील अभिजात वर्ग ड्यूमा में शामिल हो गए थे और रूढ़िवादी राजशाही को बचाने में सक्षम नहीं थे।

(iv) Middle class had not emerged due to specific nature of industrial revolution in Russia.

(v) The fast proletarianization of Russian workers.They formed 'Social democratic party' in 1895.Peasants also formed Social revolutionary party in 1905.

(vi) Later social democratic party divided into Menshevik party and Bolshevik party. They were different in their method and discipline

iv) रूस में औद्योगिक क्रांति की विशिष्ट प्रकृति के कारण मध्यम वर्ग का उदय नहीं हुआ था।

(v) रूसी श्रमिकों का तेज़ी से सर्वहाराकरण हुआ। उन्होंने 1895 में 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' का गठन किया। किसानों ने भी 1905 में सोशल रिवोल्यूशनरी पार्टी का गठन किया।

(vi) बाद में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी मेंशेविक पार्टी और बोल्शेविक पार्टी में विभाजित हो गई। ये दोनों अपनी कार्यप्रणाली और अनुशासन में भिन्न थे।

(vii) The Reactions of minorities against the policy of russiafication.

(viii) Scholars like Dostoyevsky,Turganev and Leo Tolstoy filled the feeling of modernity in Russian people.

(vii) रूसीकरण की नीति के विरुद्ध अल्पसंख्यकों की प्रतिक्रियाएँ।

(viii) दोस्तोवस्की, तुर्गनेव और लियो टॉल्स्टॉय जैसे विद्वानों ने रूसी लोगों में आधुनिकता की भावना भरी।

(ix)The Russian Monarch Czar Nicholas participated in the first world war but did not do prior economic management .It resulted into the scarcity of essential goods in market.In his absence,his chief queen Czarina and her spiritual teacher Rasputin started to hatch out the conspiracy.It degraded the prestige of Monarchy.

(ix) रूसी सम्राट जार निकोलस ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया, किन्तु उसने पूर्व आर्थिक प्रबंधन नहीं किया। परिणामस्वरूप बाजार में आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गई। उसकी अनुपस्थिति में उसकी प्रमुख रानी ज़ारिना और उसके आध्यात्मिक गुरु रासपुतिन ने षडयंत्र रचना शुरू कर दिया। इससे राजतंत्र की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची।

In march 1917, at least 4-5 lakh workers came on the road of Petrograd. Czar ordered the army to disperse the mob but army refused the order and formed an association with workers at Petrograd. In this way 'Petrograd Soviet' came into existence.

मार्च 1917 में, कम से कम 4-5 लाख मज़दूर पेत्रोग्राद की सड़कों पर उतर आए। ज़ार ने सेना को भीड़ को तितर-बितर करने का आदेश दिया, लेकिन सेना ने आदेश को अस्वीकार कर दिया और पेत्रोग्राद में मज़दूरों के साथ एक संघ बनाया। इस प्रकार 'पेत्रोग्राद सोवियत' अस्तित्व में आया।

On 15th March1917 Czar Nicholas-II resigned and a new government under Lvoy was formed but soon Bourgeoisie government of Lvoy sandwiched between Duma and Petrograd Soviet.Thus Lvoy government declined.

15 मार्च 1917 को ज़ार निकोलस द्वितीय ने इस्तीफा दे दिया और लुवाव के नेतृत्व में एक नई सरकार का गठन हुआ, लेकिन जल्द ही लुवाव की बुर्जुआ सरकार ड्यूमा और पेट्रोग्राद सोवियत के बीच फंस गई। इस प्रकार लवॉय सरकार का पतन हो गया।

New Liberal socialistic government under Kerensky was formed but he also failed to solve the new problems.

केरेन्स्की के नेतृत्व में नई उदार समाजवादी सरकार का गठन हुआ लेकिन वह भी नई समस्याओं को हल करने में विफल रही।

During this period of uncertainty,Lenin appeared in Russia with German help in April 1917.He converted minor Bolshevik group into a strong political party.He redefined Marxism according to Russian situation.He assumed that the proletariat class should play a major role in Future's revolution.

अनिश्चितता के इस दौर में अप्रैल 1917 में लेनिन जर्मन मदद से रूस में आया । उसने छोटे बोल्शेविक समूह को एक मजबूत राजनीतिक दल में परिवर्तित कर दिया। उसने रूसी परिस्थिति के अनुसार मार्क्सवाद को पुनः परिभाषित किया। उसने यह मान लिया कि भविष्य की क्रांति में सर्वहारा वर्ग को प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

He composed a paper named as 'Two tactics of social democrates'. He presented the strategy for Bolshvik party. A/c to Lenin proletariat class should have completed the first stage of revolution with the help of peasants.

उसने 'सामाजिक लोकतंत्रवादियों की दो कार्यनीतियाँ' नामक एक शोधपत्र लिखा। उसने बोल्शविक पार्टी की रणनीति प्रस्तुत की। लेनिन के अनुसार, सर्वहारा वर्ग को किसानों की मदद से क्रांति का पहला चरण पूरा करना चाहिए था।

Lenin thought that in course of first stage revolution peasantry will divide in higher and lower peasantry. Now proletariat class could have completed the second stage revolution with the help of lower peasantry .Lenin was a genious and great opportunist . He always believed in the 2 split .

लेनिन का मानना था कि प्रथम चरण की क्रांति के दौरान किसान उच्च और निम्न किसानों में विभाजित हो जाएँगे। अब सर्वहारा वर्ग निम्न किसानों की मदद से द्वितीय चरण की क्रांति पूरी कर सकता था। लेनिन एक प्रतिभाशाली और महान अवसरवादी थे। वे हमेशा दो वर्गों में विभाजित होने में विश्वास करते थे।

In October 1917,Lenin ordered Trotsky to capture all the important govt chambers. Trotsky controlled all the Govt institutions , so the Dictatorship of Proletariates was established but Govt had new challenges like-

1-Redistribution of land

2-Issue of personal property

3-Constitution for Russian people

4- War with Germany

अक्टूबर 1917 में, लेनिन ने ट्रॉट्स्की को सभी महत्वपूर्ण सरकारी संस्थानों पर कब्ज़ा करने का आदेश दिया। ट्रॉट्स्की ने सभी सरकारी संस्थानों पर नियंत्रण कर लिया, इस प्रकार सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्थापित हो गई, लेकिन सरकार के सामने नई चुनौतियाँ थीं, जैसे-

1- भूमि का पुनर्वितरण

2-निजी संपत्ति का मुद्दा

3-रूसी लोगों के लिए संविधान

4-जर्मनी के साथ युद्ध

Lenin solved the problem one by one.At first,he concluded the Treaty of Brestltovsk with Germany. Now He was free to deal domestic matters-

1-Lenin redistributed the land among peasants.

2-He organised a big Army named 'Red Army' under the headship of Trotsky.

लेनिन ने एक-एक करके समस्याओं का समाधान किया। सबसे पहले, उसने जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि की। अब वह वे घरेलू मामलों से निपटने के लिए स्वतंत्र था -

1-लेनिन ने किसानों के बीच ज़मीन का पुनर्वितरण किया।

2- उसने ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में 'लाल सेना' नामक एक विशाल सेना का गठन किया।

Thereupon,He pushed out foreign army from Russia and suppressed internal uprisings.

Now He conducted an election in Russia to form constituent assembly to frame new constitution. soon He established control over constituent assembly and produced new constitution under Bolshevik government.

इसके बाद, उसने रूस से विदेशी सेना को खदेड़ दिया और आंतरिक विद्रोहों को दबा दिया।अब उसने रूस में नए संविधान की रचना हेतु संविधान सभा के गठन हेतु चुनाव करवाए। जल्द ही उसने संविधान सभा पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और बोल्शेविक सरकार के अधीन नया संविधान तैयार किया।

Now Lenin adopted the policy of Terror and compromise simultaneously. He organised secret police Cheka and suppressed enemies.

In 1918,He introduced the policy of communist war in order to enhance production in Russia.He established control over factories and Agricuture .He introduced New economic policy in 1921.

अब लेनिन ने आतंक और समझौते की नीति एक साथ अपनाई। उसने गुप्त पुलिस चेका का गठन किया और दुश्मनों का दमन किया।1918 में, उसने रूस में उत्पादन बढ़ाने के लिए साम्यवादी युद्ध की नीति अपनाई। उसने कारखानों और कृषि पर नियंत्रण स्थापित किया। उसने 1921 में नई आर्थिक नीति लागू की।

Replying to a critic, he said, if we have taken three step forward and only one step backward but still we are two steps ahead.

Significance of Russian Revolution

1- First successful proletariat revolution of the world.

2-It encouraged communist Ideas all over the world.

3- Alternative model of development in form of economic planning and state control economy.

4- Prepared the way for the process of decolonisation.

5-The whole world got divided on the basis of Ideology.

एक आलोचक को जवाब देते हुए उसने कहा, "अगर हम तीन कदम आगे बढ़े हैं और सिर्फ़ एक कदम पीछे, तो भी हम दो कदम आगे हैं।

"रूसी क्रांति का महत्व-

1- दुनिया की पहली सफल सर्वहारा क्रांति।

2- इसने पूरे विश्व में साम्यवादी विचारों को प्रोत्साहित किया।

3- आर्थिक नियोजन और राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था के रूप में विकास का वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया।

4- उपनिवेशवाद-विमुक्ति की प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त किया।

5- विचारधारा के आधार पर सम्पूर्ण विश्व विभाजित हो गया।